

सी यू के बुलेटिन

इसरो अध्यक्ष डॉ. वी. नारायणन की उपस्थिति में
सीयूके का 8वां दीक्षांत समारोह





ज्ञान ही शक्ति है। सूचना मुक्तिदायक है। शिक्षा हर समाज और हर परिवार की प्रगति का आधार है," कोफ़ी अन्नान ने बिल्कुल सही कहा था। वास्तव में, शिक्षा व्यक्तिगत और सामाजिक सशक्तिकरण तथा राष्ट्र के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण आधारशिला है। यह ज़िम्मेदार और प्रबुद्ध नागरिकता, और नैतिक एवं बौद्धिक कौशल का विकास करती है जो लोगों को समाज की बेहतरी में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए आवश्यक हैं।

इस वर्ष, हम अपने प्रतिष्ठित संस्थान के आठवें दीक्षांत समारोह को अत्यंत गौरव और गहन संतुष्टि की भावना के साथ मना रहे हैं। वास्तव में, यह अवसर हमारे स्नातकों की शैक्षणिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है और उच्च शिक्षा में उत्कृष्टता के प्रति हमारी सतत प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है।

इस भव्य दीक्षांत समारोह में, हमें भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष डॉ. वी. नारायणन की मुख्य अतिथि और दीक्षांत वक्ता के रूप में मेज़बानी करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। भारत के विकास और नवाचार के पथ पर विचार करने के साथ-साथ, डॉ. नारायणन के भाषण ने भविष्य के लिए एक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान किया और साथ ही विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उनके विशिष्ट करियर पर गहन टिप्पणी भी की। उनके शब्दों ने हमारे स्नातकों को प्रेरित किया और उन्हें कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

इस वर्ष, शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए 36 स्वर्ण पदक प्रदान किए गए, जिनमें 25 स्नातकोत्तर छात्र, 10 स्नातक छात्र और प्रतिष्ठित प्रो. ए. एम. पठान स्वर्ण पदक के एक प्राप्तकर्ता शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, विभिन्न विषयों के 27 शैक्षणिक विभागों का प्रतिनिधित्व करने वाले 197 स्नातक छात्रों, 627 स्नातकोत्तर छात्रों और 38 डॉक्टरेट विद्वानों को उपाधियाँ प्रदान की गईं। मैं इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के छात्र बुरा मस्तान वेदसाई साहित्य नितिन को बधाई देता हूँ और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ, जिन्हें सर्वोच्च दो स्वर्ण पदक, प्रो. ए. एम. पठान स्वर्ण पदक और विश्वविद्यालय पदक से सम्मानित किया गया।

दीक्षांत समारोह केवल शैक्षणिक गतिविधियों का औपचारिक समापन नहीं है; यह केवल शैक्षिक प्रयासों का औपचारिक समापन नहीं, बल्कि दृढ़ता, सिद्धि और भविष्य में योगदान की आशा का उत्सव है। मैं अपने स्नातक छात्रों को बधाई देता हूँ और यह संदेश देना चाहता हूँ कि यह अवसर एक अंत और एक शुरुआत, दोनों का प्रतीक है।

मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप इस संस्थान की ईमानदारी, जांच-पड़ताल और सेवा मूल्यों को आगे बढ़ाएं।

प्रो. बट्ट सत्यनारायण

कुलपति

कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कलबुर्गी



मुझे इस वर्ष के अंकुर 2025, जो हमारे विश्वविद्यालय का वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव है - प्रतिभा, परंपरा, नवाचार और युवा उत्साह, के अवसर पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। जहाँ हमारा विश्वविद्यालय अकादमिक उत्कृष्टता की ओर निरंतर अग्रसर है, वहीं अंकुर जैसे आयोजन हमारे छात्रों की सांस्कृतिक और रचनात्मक भावना का पोषण करते हैं। अंकुर 2025 केवल एक सांस्कृतिक और खेल आयोजन ही नहीं है, बल्कि यह छात्रों, संकायों और कर्मचारियों के लिए उनकी विविध संस्कृतियों और प्रतिभाओं का जश्र मनाने का एक यादगार सफ़र बनाने वाला एक मंच है। अंकुर 2025 के अंतिम चरण में, हमने संगीत, नृत्य, रंगमंच, साहित्यिक कृतियों और विभिन्न खेल गतिविधियों के माध्यम से कलात्मक अभिव्यक्तियों का अद्भुत प्रदर्शन देखा है।

पूरे समारोह का सबसे यादगार और आकर्षक हिस्सा पुरस्कार वितरण था, जहाँ विजेताओं को उनकी कड़ी मेहनत और लगन के लिए सम्मानित किया गया। विजेताओं के चेहरों पर खुशी के पल वाकई प्रेरणादायक थे, जिनकी प्रतिभा ने उनके साथियों और विश्वविद्यालय को गौरवान्वित किया। मैं उन सभी प्रतिभागियों को संबोधित कर रहा हूँ जो शायद विजेता सूची में शामिल नहीं हो पाए, आपकी भागीदारी ने भी इस आयोजन को सार्थक और सफल बनाया।

मैं आयोजन समिति, छात्र स्वयंसेवकों, सांस्कृतिक क्लबों, संकाय सलाहकारों और पदों के पीछे कड़ी मेहनत करने वाले सभी लोगों का तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ। आपके अटूट योगदान और अथक प्रयास ने इस आयोजन को भव्य बनाया है। अंकुर 2025 हमारे लिए ढेरों यादें और हमारे विश्वविद्यालय के समृद्ध सांस्कृतिक ताने-बाने के प्रति नई कृतज्ञता छोड़ गया है। इस उत्सव को आगे बढ़ाते हुए, आइए हम अपने छात्र समुदाय की कलात्मक और सांस्कृतिक गतिविधियों का समर्थन और प्रोत्साहन करते रहें। उत्सव के ये पल हमें याद दिलाते हैं कि शिक्षा केवल कक्षाओं तक सीमित नहीं है; यह वहाँ फलती-फूलती है जहाँ रचनात्मकता को पनपने दिया जाता है।

आप सभी को आगे की यात्रा के लिए शुभकामनाएं।

प्रो. आर. आर. बिरादार
कुलसचिव
कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कलबुरगी

सीयूके में सामुदायिक आवास शिविर का उद्घाटन



3 फ़रवरी, 2025: "शिक्षक समाज की रीढ़ हैं। वे गाँवों और समुदायों के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राष्ट्र निर्माण कक्षा की चारदीवारी के भीतर होता है और शिक्षक भावी नागरिकों का मार्गदर्शन और प्रेरणा देने की कुंजी होते हैं।" कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित सामुदायिक जीवन शिविर के उद्घाटन के अवसर पर सीयूके के माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने ज़ोर देकर कहा।

बी.एड. प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुए, शिक्षा विभाग के प्रमुख और डीन प्रोफेसर जी.आर. अंगडी ने बी.एड. प्रशिक्षुओं के लिए वास्तविक जीवन के अनुभव के साथ सामाजिक आवश्यकताओं को समझने के लिए सामुदायिक जीवन शिविरों के महत्व पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर, बी.एड. प्रशिक्षुओं ने पिछले शिविरों के अपने परिवर्तनकारी अनुभव भी साझा किए और सामुदायिक सहभागिता के महत्व पर ज़ोर दिया, जो उनके पेशेवर विकास को समृद्ध बनाने में मदद करता है। प्रशिक्षुओं ने कड़गंची गाँव में एक आउटरीच कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें स्वास्थ्य और स्वच्छता के बारे में जागरूकता अभियान पर ध्यान केंद्रित किया गया और स्थानीय समुदाय को नाटकों, नृत्य प्रदर्शनों और नारा रैलियों के माध्यम से शामिल किया गया। उनके प्रयासों का उद्देश्य स्वच्छता, सफाई और समग्र कल्याण के बारे में आवश्यक संदेश फैलाना था।

शिविर समन्वयक डॉ. वी. साई अभिनव ने धन्यवाद ज्ञापन किया। डॉ. मयूर पुजार, डॉ. पवाड़प्पा, डॉ. निशा प्रजापति और अन्य संकाय सदस्य एवं छात्र उपस्थित थे।



केंद्रीय बजट 2025-26 पर सीयूके में संगोष्ठी आयोजित



10 फरवरी, 2025: व्यवसाय अध्ययन स्कूल, सीयूके द्वारा आयोजित यूनियन बजट 2025-26 पर एक संगोष्ठी का उद्घाटन माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने किया, जिसमें देश की आर्थिक वृद्धि पर बजट के महत्व पर जोर दिया गया।

उन्होंने छात्रों को देश की अर्थव्यवस्था के बारे में अपडेट रहने के लिए समाचार पत्र पढ़ने और बजट का लोगों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने नई परियोजनाओं और योजनाओं को आम लोगों तक पहुँचाने में मदद करने वाली तकनीक को अपनाने की सरकार की पहल पर प्रकाश डाला।

कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने पैनल में बजट के सभी पहलुओं पर चर्चा करते हुए अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। उन्होंने आगे कहा कि प्रत्येक बजट के उद्देश्य को समझने के लिए हमें उन परिस्थितियों को समझना होगा जिनमें उसे प्रस्तुत किया जाता है, और यह वैश्विक मंदी, रूस-यूक्रेन युद्ध, ट्रम्प की टैरिफ रणनीति, वैश्विक अनिश्चितताओं, उच्च मुद्रास्फीति,

रुपये के अवमूल्यन, बढ़ती बेरोजगारी और कम जीडीपी वृद्धि की पृष्ठभूमि में भी प्रस्तुत किया जाता है।

संगोष्ठी में अन्य वक्ताओं में प्रो. देवराजप्पा ने 'रेवेन्यू एंड पब्लिक एक्सपेंडिचर', डॉ. शुष्मा एच ने 'इम्पैक्ट ऑन एग्रीकल्चर', डॉ. सफिया परवीन ने 'बूस्ट टू हेल्थ एंड एजुकेशन', डॉ. गणपति बी सिन्नूर ने 'स्पर टू ग्रोथ ऑफ़ मैनुफैक्चरिंग सेक्टर', डॉ. शैलजा कोनेक ने 'इन्सेन्टिव्स टू सर्विस सेक्टर', डॉ. लिंग मूर्ति ने 'स्ट्रक्चरल चेंजेस फॉर एमएसएमईस', डॉ. मल्लेश उम्माला ने 'एनर्जी टू एनर्जी सेक्टर', डॉ. महेंद्र रेड्डी ने 'ग्रोथ ओपपोर्टुनिस्म टू टूरिज्म सेक्टर', प्रो. पांडुरंग वी ने 'चेंजेस इन डायरेक्ट एंड इंडिरैक्ट टैक्सेशन' पर बात की। डॉ. नटराज पट्टेद और डॉ. रंगनाथम जी ने सत्र का संचालन किया। डॉ. ज़ोहेर ने सभा का स्वागत किया और धन्यवाद प्रस्ताव रखा। इस कार्यक्रम में व्यवसाय अध्ययन स्कूल के अन्य संकाय सदस्यों और छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।



सीयूके में 'विकसित भारत थ्रू ट्राइबल एम्पावरमेंट' पर राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन



11 फरवरी, 2025: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर), नई दिल्ली के सहयोग से 'विकसित भारत थ्रू ट्राइबल एम्पावरमेंट: विकसित भारत थ्रू ट्राइबल एम्पावरमेंट हरनेसिंग द ट्रेडिशनल विजडम, कल्चरल हेरिटेज, एंड एन्ट्रेप्रेन्यूरियल एबिलिटीज' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। मुंबई स्थित टीआईएसएस इनक्यूब फाउंडेशन के प्रबंध निदेशक प्रो. सत्यजीत मजूमदार ने आदिवासी समुदायों पर मुख्य भाषण दिया और इस बात पर जोर दिया कि आदिवासी पिछड़े नहीं हैं बल्कि वे इस धरती के पहले निवासी हैं। उन्होंने जल, जमीन और जंगल में समाहित आदिवासी समुदायों और प्रकृति के बीच गहरे संबंध पर प्रकाश डाला। जनजातीय पारंपरिक ज्ञान (मूल निवासी बुद्धिमत्ता), सांस्कृतिक विरासत (टिकाऊ प्रथाएं) और उद्यमशीलता क्षमता (सामाजिक कल्याण के लिए आत्मनिर्भरता) पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास में बहुमूल्य शिक्षा प्रदान करते हैं।

प्रो. मजूमदार ने पारंपरिक आदिवासी मूल्यों की तुलना आधुनिक आर्थिक ढाँचों से करते हुए कहा कि अधिक कमाना एक समकालीन आख्यान है, जैसे साथ मिलकर खुशी से रहना एक आदिवासी आख्यान है। इसी प्रकार, शिक्षा, आधुनिकता और तकनीक आधुनिक मूल्य हैं, जबकि जीवन कौशल, संस्कृति और स्वदेशी ज्ञान आदिवासी मूल्य व्यवस्था हैं।

इसलिए सरकार की तथाकथित आधुनिक रणनीतियाँ और योजनाएँ उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं हैं और उद्देश्यों को पूरा करने में विफल रहती हैं। विकासात्मक गतिविधियों के लिए उन्हें नीति निर्माण और कार्यान्वयन में सक्रिय भागीदार होना चाहिए, न कि सहायता के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता। संदर्भ-संवेदनशील शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और आर्थिक नीतियों की आवश्यकता है जो आदिवासी ज्ञान प्रणालियों का सम्मान करें और उन्हें एकीकृत करें, न कि उनका स्थान लें।"

सीयूके के माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए कहा, "विकसित भारत के विज्ञान को साकार करने के लिए जनजातीय विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें जनजातीय समुदायों के समृद्ध वैज्ञानिक ज्ञान का, विशेष रूप से हर्बल औषधि, कृषि और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में, भरपूर उपयोग करना होगा।"

सम्मेलन के संयोजक डॉ. शिवकुमार एम. बेली ने परिचयात्मक भाषण दिया, प्रो. पवित्रा आर. अलूर ने स्वागत भाषण दिया और डॉ. रोहिनाक्ष ने धन्यवाद ज्ञापन किया। स्मृति साजी ने कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ. जयदेवी जंगमशेट्टी और डॉ. स्वप्निल चापेकर ने राष्ट्रगीत और राष्ट्रगान प्रस्तुत किया। प्रो. बसवराज कुबकड्डी, प्रो. पांडुरंगा पट्टी, प्रो. चन्नवीर आर. एम., डॉ. एम. ज़ोहैर, डीन, विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्य और छात्र उपस्थित थे।



सीयूके में भारतीय भाषा परिवार पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

12 फ़रवरी, 2025: मुख्य वक्ता प्रो. प्रकाशम वेनेलकांति, पूर्व प्रोफेसर, अंग्रेजी और विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद ने कहा "भाषाओं का व्यवस्थित मॉडल भारतीय मूल का है जहाँ शब्दावली व्याकरण और अर्थ एक साथ चलते हैं और संरचना और अर्थबोध एक साथ चलते हैं और संरचना और वाक्यविन्यास भी एक साथ चलते हैं।" उन्होंने 'डायलेक्टिक्स ऑफ़ स्ट्रक्चर एंड सिग्नीफिकेन्स' पर अपने विचार प्रस्तुत किए। वे "भारतीय भाषा परिवार: एन इंटीग्रेटेड एप्रोच टू लैंग्वेज स्टडीज" विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के अवसर पर बोल रहे थे।

कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति एवं अध्यक्ष प्रो. बट्ट सत्यनारायण ने कहा, "भाषा मनुष्य को एक सुंदर उपहार है। प्रत्येक राज्य की अपनी भाषा होती है और ज्ञान प्रदान करने के लिए व्यक्तिगत भाषा महत्वपूर्ण होती है। हम अलग-अलग भाषाएँ बोल सकते हैं, लेकिन हमारी संस्कृति एक है।"

संसाधन व्यक्ति, प्रो. मैथीसेन, मार्टिन क्रिश्चियन मैथियास, विशिष्ट प्रोफेसर, भाषा विज्ञान विभाग, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं अर्थशास्त्र विश्वविद्यालय, बीजिंग ने 'प्रणालीगत कार्यात्मक भाषा विवरण' पर बात की और कहा, "भारतीय भाषाएँ, भाषाओं की व्यवस्थित व्यवस्था में बहुत योगदान देती हैं।" कार्यशाला के संयोजक प्रो. भीमराव पांडा भोसले ने कहा, "समाज, भाषा और व्यक्ति एक संस्था हैं। भाषाएँ इंजन हैं और प्रत्येक व्यक्ति अपना स्वामी है। अपनी संस्कृति और भारतीयता को बढ़ावा देने के लिए हमें अपनी मातृभाषा का प्रयोग करना होगा।" उन्होंने आगे कहा, "भारतीय-आर्य भाषाएँ सांस्कृतिक भेद हैं, न कि नस्लीय भेद।"

तीन दिवसीय कार्यशाला में प्रो. सुखदेव, प्रो. वांग पिंग, शंघाई, जियाओ टोंग विश्वविद्यालय, प्रो. जॉर्ज आरुस, कॉम्प्लूटेंस यूनिवर्सिटी ऑफ मैड्रिड, स्पेन, प्रो. अशोक थोरात, डॉ. कृष्णरंजन भट्टाचार्य जैसे प्रख्यात विद्वानों ने विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यान दिए।

युवा और सहयोग पर इंटरैक्टिव कार्यक्रम

14 फ़रवरी, 2025: सीयूके के माननीय कुलपति प्रो. बट्ट सत्यनारायण ने कहा, "सहकारी समितियाँ सतत और समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।" आज वे कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय और कर्नाटक राज्य सौहार्द संघीय सहकारी लिमिटेड, बेंगलुरु द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित "युवा और सहकारिता पर संवादात्मक कार्यक्रम" में बोल रहे थे। उन्होंने आगे कहा, "सहकारी आंदोलनों और समितियों ने देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विशेष रूप से महाराष्ट्र राज्य सहकारी विकास के लिए जाना जाता है। सहकारी आंदोलन 'विकसित भारत' के विजन को साकार करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।"

मुख्य भाषण चाणक्य विश्वविद्यालय, बेंगलुरु के माननीय कुलपति प्रो. यशवंत डोंगरे ने दिया। उन्होंने कहा, "संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2025 को अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष घोषित किया है। 2008-09 के वित्तीय संकट ने यह उजागर किया कि सहकारी संगठन आर्थिक उद्यमों का सबसे लचीला स्वरूप हैं। सहकारिताएँ लोगों के दैनिक जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आज दुनिया भर में 28% नए स्टार्टअप सहकारी मॉडल का अनुसरण करते हैं। संयुक्त राष्ट्र युवाओं को एक समृद्ध विश्व के निर्माण हेतु सामूहिक समूहों के रूप में सहकारी संरचनाओं के महत्व को समझने के लिए प्रोत्साहित करता है, और इस बात पर बल देता है कि निरंतर आर्थिक विकास के लिए सामूहिकता और सहयोग आवश्यक हैं। इफको सहित सत्रह भारतीय सहकारी संगठन शीर्ष 300 वैश्विक सहकारी संगठनों में शामिल हैं।

भारत में विश्व में सबसे अधिक संख्या में सहकारी समितियाँ हैं, जो इसके सकल

घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।"

सीयूके के कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने भी सभा को संबोधित किया और कहा, "सहकारिता धन के असमान वितरण को कम करने का समाधान है। सहकारी समितियाँ "प्रत्येक सबके लिए और सभी प्रत्येक के लिए" के सिद्धांत पर काम करती हैं। हम सभी को समाज के हित में काम करना होगा और सतत विकास के लिए सहकारिता में युवाओं की भागीदारी और सहभागिता आवश्यक है। सहकारिता में समावेशी और समतामूलक आर्थिक प्रगति को गति देने की क्षमता है।"

केएसएसएसएफसीएल, बेंगलुरु के उपाध्यक्ष श्री ए. आर. प्रसन्नकुमार ने अध्यक्षीय भाषण दिया और कहा, "सहकारी आंदोलनों ने आर्थिक विकास और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। युवाओं को सहकारी क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए, क्योंकि नवाचार को बढ़ावा देने और सहकारी उद्यमों को बनाए रखने में उनकी भागीदारी महत्वपूर्ण है।"

इससे पहले, कर्नाटक राज्य सौहार्द संघीय सहकारी लिमिटेड (केएसएसएसएफसीएल), बेंगलुरु के प्रबंध निदेशक, शरणगौड़ा जी. पाटिल ने परिचयात्मक भाषण दिया। सामाजिक एवं व्यवहार विज्ञान संकाय के डीन, प्रो. पवित्रा आर. आलूर ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया। प्रो. चन्नवीर आर. एम., प्रो. पांडुरंगा वी., डॉ. एम. ज़ोहैर, संकाय सदस्य और छात्र उपस्थित थे।

भविष्य में ज्ञान की अपेक्षा कौशल पर ज़ोर - न्यायमूर्ति जोशी



21 फ़रवरी, 2025: कलबुर्गी - हमारी शिक्षा प्रणाली में अब तक ज्ञान को अत्यधिक महत्व दिया गया है। हालाँकि, आगे चलकर, ज्ञान की तुलना में कौशल को प्राथमिकता दी जाएगी। छात्र अब अपनी उंगलियों पर ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम हैं। चार्ल्स डार्विन के सिद्धांत के अनुसार, कौशल और योग्यता वाले लोग भविष्य में प्रमुखता प्राप्त करेंगे, कर्नाटक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री चंद्रशेखर जोशी ने कहा।

वे कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के शिक्षा एवं प्रशिक्षण संकाय द्वारा आयोजित "कानूनी विशेषज्ञता के साथ व्यावसायिक चुनौतियों का सामना" विषय पर एक विशेष व्याख्यान में मुख्य संसाधन व्यक्ति के रूप में बोल रहे थे। न्यायमूर्ति जोशी ने आगे कहा कि यह कहना

अपराध है कि हमें कानून की जानकारी नहीं है। नागरिकों के लिए कानून की जानकारी होना आवश्यक है।

उन्होंने छात्रों और शिक्षकों के जीवन में आने वाली विभिन्न चुनौतियों को बारीकी से समझाया। उन्होंने छात्रों के कई प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर भी दिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बट्टु सत्यनारायण ने की। कार्यक्रम की शुरुआत श्रीषमा द्वारा गाए गए वंदे मातरम गीत से हुई। शिक्षा विभाग के डीन प्रो. जी. आर. अंगड़ी ने अतिथियों का स्वागत और परिचय कराया। डॉ. पी. बी. बागेवाड़ी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। डॉ. अखिलेश मिश्रा ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

सीयूके में श्री संत सेवालाल महाराज की 286वीं जयंती मनाई गई



22 फ़रवरी, 2025: शक्ति पीठ गोबरवाड़ी के श्री संत बलिराम महाराज ने कहा "छात्रों को जीवन और समय को महत्व को समझना होगा। स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए आपको अपने विचारों, भावनाओं और कार्यों पर चिंतन करना होगा।" कल वे कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय, कलबुर्गी में श्री संत सेवालाल महाराज की 286वीं जयंती के अवसर पर आयोजित समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने आगे कहा, "आपको अपनी शक्ति का एहसास होना चाहिए और राष्ट्र के विकास के अनुरूप व्यक्तिगत विकास में अपनी ऊर्जा लगानी चाहिए।"

सीयूके के माननीय कुलपति प्रो. बट्टु सत्यनारायण ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए कहा, "युवाओं को अपनी जड़ों से जुड़ना चाहिए, संस्कृति और परंपराओं को संजोना चाहिए। आपको आधुनिक शिक्षा का लाभ उठाना चाहिए और जीवन में ऊँचे लक्ष्य रखने चाहिए। प्रेम, शांति और सद्भाव का संदेश फैलाने में श्री संत सेवालाल महाराज का योगदान अतुलनीय है।" हमें सभी भाषाओं और

संस्कृतियों का सम्मान करना होगा और प्रत्येक समुदाय से सर्वश्रेष्ठ प्राप्त करके सद्भाव स्थापित करना होगा तथा राष्ट्र के विकास में योगदान देना होगा। सच्ची शिक्षा वह है जो व्यक्ति को समर्पित, ज्ञानवान, आत्मविश्वासी, विनम्र और मानवीय बनाती है।" प्रो. दशरथ एस. नाइक ने गौर समुदाय की समृद्ध विरासत और परंपरा के बारे में बताया। प्रो. आर. आर. बिरादार ने स्वतंत्रता संग्राम में समुदाय के योगदान और भारत की समृद्ध संस्कृति पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. पी.एस. कट्टिमनी, पुस्तकालयाध्यक्ष, सीयूके ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया और परिचयात्मक भाषण दिया, प्रो. गणेश पवार ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर विभिन्न संकायों के डीन, विभागाध्यक्ष, शिक्षण संकाय, गैर-शिक्षण कर्मचारी, शोधार्थी और छात्र उपस्थित थे।

25वां अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया गया



22 फ़रवरी, 2025: "आज स्वस्थ समाज के लिए भाषा और लैंगिक संवेदनशीलता कार्यक्रमों की आवश्यकता है," पुणे स्थित इंस्टिट्यूट ऑफ़ एडवांस्ड स्टडीज़ इन इंग्लिश के संस्थापक निदेशक प्रो. अशोक थोरात ने कहा। कल वे सीयूके के मानविकी एवं भाषा संकाय के भाषा विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित 25वें अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर बोल रहे थे। इस वर्ष के समारोह का विषय है "भाषाई विविधता, बहुभाषी शिक्षा और स्थानीय भाषाओं के संरक्षण का महत्व"। उन्होंने आगे कहा, "बहुभाषिकता संज्ञानात्मक कौशल को बढ़ाती है, सांस्कृतिक विविधता को मज़बूत करती है और एक वैश्विक नागरिकता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।" सीयूके के माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने कहा, "भाषाएँ सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने, सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने और पारिस्थितिक ज्ञान को बनाए

रखने को बढ़ावा देने, सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने और पारिस्थितिक ज्ञान को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भाषा लोगों को सीमाओं से परे जोड़ती है, उनके भावनात्मक और सांस्कृतिक संबंधों को मज़बूत करती है।" इस अवसर पर प्रो. सुनीता मंजनबैल, प्रो. भीमराव पांडा भोसले, प्रो. बसवराज पी. डोनूर, प्रो. संदीप रणभिरकर, डॉ. शिवगंगा रुम्मा ने भी बात की। भाषाविज्ञान विभाग की समन्वयक डॉ. मंजुलाक्षी एल. ने परिचयात्मक भाषण दिया। डॉ. अंकिता सतपथी ने सभा का स्वागत किया, डॉ. जयदेवी जंगमशेट्टी, डॉ. स्वप्निल चंद्रकांत चाफेकर ने राष्ट्रीय गीत और राष्ट्रगान प्रस्तुत किया। डॉ. अंजनेयुलु ने धन्यवाद ज्ञापित किया। विद्यार्थियों के लिए हिंदी, अंग्रेजी और कन्नड़ में विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई थीं। विजेताओं को प्रमाण पत्र और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

मेधावी छात्रों और संगठन को सम्मानित किया गया



28 फरवरी, 2025: बैंक ऑफ बड़ौदा ने कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में मेधावी छात्रों के लिए एक सम्मान समारोह का आयोजन किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय प्रो. बट्टू सत्यनारायणजी ने की और विशिष्ट अतिथि के रूप में बैंक ऑफ बड़ौदा के मुख्य प्रबंधक और क्षेत्रीय उप प्रबंधक श्री एन. वी. भीमाशंकर जी और आंचलिक कार्यालय, मंगलुरु की वरिष्ठ प्रबंधक सुगुणावती जी उपस्थित थीं। हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. संदीप रणभिरकर ने परिचयात्मक वक्तव्य दिया और प्रो. गणेश पवार का स्वागत किया। श्री एन. वी. भीमाशंकर जी ने हिंदी भाषा की आवश्यकता और महत्व पर प्रकाश डाला। सुगुणावती जी ने बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे निरंतर कार्यों की जानकारी दी और छात्रों को भाषा सीखने के लिए प्रोत्साहित किया।

अध्यक्षीय भाषण में माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण जी ने विश्वविद्यालय की ओर से बैंक ऑफ बड़ौदा को हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन और मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित करने के लिए धन्यवाद दिया। हिंदी में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा योगिता शिरुरे को 11,000/- रुपये की नकद राशि, उपहार सामग्री और प्रमाण पत्र

तथा द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र अब्बास दलितंबर को 7500/- रुपये प्रदान किए गए। इस अवसर पर बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए 'हिंदी कविता पाठ' प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

इस प्रतियोगिता में अनेक विद्यार्थियों ने भाग लिया। इनमें से पाँच विद्यार्थियों को बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा पुरस्कृत किया गया। इसके बाद आयोजित कवि सम्मेलन की अध्यक्षता प्रो. सुनीता मंजनबैल ने की। कवि सम्मेलन में डॉ. कुमार मंगलम, डॉ. विलास सालुंखे, डॉ. रेणुका नायक, डॉ. अंबुजा मालखेड़कर ने अपनी कविताओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। डॉ. भावना ने अपने उत्कृष्ट मंच संचालन से पाठकों को बांधे रखा। डॉ. संजीवरायप्पा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। डॉ. गोविंद जाधव और डॉ. मुदुनर दत्ता ने कार्यक्रम का संचालन किया। हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. संदीप रणभिरकर और डीन प्रो. विक्रम विसाजी ने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए हिंदी विभाग के संकाय सदस्यों, शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों को बधाई दी।

सीयूके में राष्ट्रीय पेंशन योजना और एकीकृत पेंशन योजना के पक्ष और विपक्ष पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित



1 मार्च, 2025: कलबुरगी के चार्टर्ड अकाउंटेंट, सीए पर्वत कुमार बिजासपुर ने कहा, "एनपीएस और यूपीएस की वित्तीय स्थिरता, जोखिम कारकों और कर लाभों को समझना बेहतर निर्णय लेने के लिए बेहद ज़रूरी है।" कल वे कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूके) के व्यावसायिक अध्ययन स्कूल द्वारा आयोजित "राष्ट्रीय पेंशन योजना और एकीकृत पेंशन योजना के पक्ष-विपक्ष के बारे में जागरूकता" कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने आगे कहा, "एनपीएस लचीलापन, पोर्टेबिलिटी और बाजार से जुड़े रिटर्न प्रदान करता है, जबकि यूपीएस दीर्घकालिक सरकारी सहायता के साथ सुनिश्चित लाभ प्रदान करता है। कर्मचारियों को अपनी ज़रूरत और उपयुक्तता के आधार पर एनपीएस या यूपीएस चुनना चाहिए।"

"वित्तीय सुरक्षा बहुत महत्वपूर्ण है; इसलिए, आपको पेंशन योजनाओं के बारे में सोच-समझकर निर्णय लेने होंगे। मेरा मानना है कि एकीकृत पेंशन योजना, राष्ट्रीय पेंशन योजना से बेहतर है, क्योंकि इस योजना में पुरानी पेंशन प्रणाली की कुछ विशेषताएँ हैं।" सीयूके के वित्त अधिकारी श्री डी. रामदुरई ने भी सभा को संबोधित किया और पेंशन के उभरते परिदृश्य और सरकारी कर्मचारियों पर इसके प्रभाव पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मोहम्मद जोहैर, डॉ. सुमा स्कारिया, डॉ. जी. महेंद्र, विभागाध्यक्ष, प्रो. देवराजप्पा एस., डॉ. रंगनाथम जी, और डॉ. शैलजा कोनेक ने किया। व्यावसायिक अध्ययन स्कूल के डीन प्रो. पांडुरंगा वी. ने चर्चा का संचालन किया। संकाय सदस्यों और गैर-शिक्षण कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

सत्र का उद्घाटन सीयूके के माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने किया। उन्होंने कहा,

विज्ञानेश्वर के स्मारक कार्यक्रम के अवसर पर विशेष व्याख्यान



2 मार्च, 2025: कर्नाटक उच्च न्यायालय-कलबुरगी पीठ के माननीय न्यायमूर्ति सुनील दत्त यादव ने 12वीं शताब्दी के महान और प्रख्यात विधिवेत्ता, मितक्षत हिंदू विधि विद्यालय के संस्थापक, संत विज्ञानेश्वर की 902वीं जयंती के अवसर पर कहा "वकीलों और कानून के छात्रों को तर्कों की मौलिकता पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए,"। यह कार्यक्रम चक्रवर्ती विक्रमादित्य-VI, विज्ञानेश्वर प्रतिष्ठान ट्रस्ट (आर), मर्तूर और कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय, कलबुरगी के विधि विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था। उन्होंने एक बेहतर समाज के निर्माण में वकीलों की महत्वपूर्ण भूमिका पर ज़ोर दिया। उन्होंने विधि के क्षेत्र में तकनीक को अपनाने के महत्व पर बल दिया और कहा कि कानूनी पेशेवरों को बदलती दुनिया के साथ तालमेल बिठाने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को अपनाना चाहिए।

कर्नाटक उच्च न्यायालय-कलबुरगी पीठ के माननीय न्यायमूर्ति आर. नटराज ने कहा कि

कानून व्याख्या के माध्यम से नए आयाम ग्रहण कर रहे हैं और समय-समय पर लोगों की आवश्यकताओं के अनुसार उन्हें अद्यतन किया जाता है। कई ऐतिहासिक निर्णयों के परिणामस्वरूप नए कानून बनाए गए हैं; इसलिए, न्यायालयों को विभिन्न विषयों में आने वाली चुनौतियों के लिए स्वयं को तैयार रखना होगा।

इस अवसर पर माननीय न्यायमूर्ति सी.एम. जोशी, कर्नाटक उच्च न्यायालय-कलबुरगी पीठ, बसवराज चेंगती, रजिस्ट्रार जनरल उच्च न्यायालय, कर्नाटक-कलबुरगी पीठ, अतिरिक्त रजिस्ट्रार न्यायिक दयानंद हिरेमठ, अमित कुमार देशपांडे वरिष्ठ अधिवक्ता, श्री महादेवय्या करदल्ली-ट्रस्टी विज्ञानेश्वर प्रतिष्ठान, डॉ. बसवराज कुबकड्डी, डीन स्कूल ऑफ लीगल ज्यूरिसप्रूडेंस, सीयूके, डॉ. रेणुका गुब्बेवाड, अधिवक्ता हर्षवर्द्धन माली पाटिल, अधिवक्ता सचिन महाजन, अधिवक्ता श्रवणकुमार मठपति, अन्य अधिवक्ता और सीयूके के कानून छात्र उपस्थित थे।

सीयूके में "एआई के युग में विदेशी भाषाओं को शिक्षण और अधिगम की चुनौतियाँ और अवसर"



7 मार्च, 2025: प्रो. आर. आर. बिरादार, कुलसचिव, सीयूके। उन्होंने सीयूके के विदेशी भाषा विभाग में आयोजित विशेष वार्ता कार्यक्रम में "चैलेंजेस एंड ओपपोर्टुनिटीज ऑफ टीचिंग एंड लर्निंग फॉरन लैंग्वेजेज इन द ऐज ऑफ एआई" विषय पर सत्र की अध्यक्षता की।

अतिथि वक्ता, वीआईटी वेल्लोर के विदेशी भाषा विभाग के डॉ. गौरव सुशांत ने कहा, "कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक रूप से उपयोग किया जा रहा है और वर्तमान संदर्भ में इसकी भूमिका काफी बढ़ गई है। आज शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जहाँ एआई का उपयोग न हो रहा हो, चाहे वह कृषि हो, वाणिज्य हो, पर्यटन हो, विनिर्माण हो, स्वास्थ्य सेवा हो या सेवा क्षेत्र हो। एआई हर जगह अग्रणी भूमिका में है।" एआई का उपयोग इन क्षेत्रों में दक्षता के नए आयाम जोड़ रहा है और शिक्षा भी एआई से अछूती नहीं है। विज्ञान, तकनीक और यहाँ तक कि भाषा सीखने में भी एआई का एकीकरण देखा जा रहा है।" उन्होंने आगे कहा, "डुओलिंगो, रोसेटा स्टोन,

बुसु और मॉडली जैसे ऐप्स की मदद से कोई भी अपनी सुविधानुसार कहीं से भी भाषाएँ सीख सकता है। हालाँकि विदेशी भाषा सीखने के क्षेत्र में एआई ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है, फिर भी अभी भी चुनौतियाँ हैं, जैसे निजीकरण का अभाव, तकनीक पर निर्भरता, सामग्री की गुणवत्ता, डेटा गोपनीयता, सुरक्षा और मूल्यांकन से संबंधित चुनौतियाँ।"

डीन, प्रो. विक्रम विसाजी ने कहा, "एआई भाषा संबंधी बाधाओं को तोड़ने और विभिन्न भाषाओं को बोलने वालों के लिए आसान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।"

विदेशी भाषा अध्ययन विभाग के समन्वयक डॉ. पी कुमार मंगलम ने सभा का स्वागत किया और परिचयात्मक भाषण दिया।

विदेशी भाषा विभाग के छात्रों ने संचालन और प्रार्थना प्रस्तुत की। श्री शिवम मिश्रा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में डॉ. इनामुल आज़ाद, श्रीमती पियाली रॉय, श्री महेंद्र एम., श्री अनिल कांबले, छात्र, शोधार्थी और संकाय सदस्य भी उपस्थित थे।

सीयूके में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2025 मनाया गया



17 मार्च: सीयूके के कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने कहा, "छात्रों और बच्चों को जिज्ञासु, चौकस रहना चाहिए और वैज्ञानिक सोच विकसित करनी चाहिए तथा मानव जाति और समाज की समस्याओं को हल करने के लिए एसटीईएम क्षेत्र (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) में अधिक नवाचार करना चाहिए।" वह 6 मार्च को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2025 मनाने के लिए रसायन विज्ञान विभाग, सीयूएच द्वारा आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम के उद्घाटन के बाद बोल रहे थे। इसके अलावा, उन्होंने छात्रों से कहा कि वे "हमारी अर्थव्यवस्था और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में सुधार के लिए अधिक नवीन उत्पादों और समाधान विकसित करके

2047 तक हमारे प्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और सभी भारतीयों के विकसित भारत के सपने का हिस्सा बनें।" राष्ट्रीय विज्ञान दिवस हर साल 28 फरवरी को 'रमन प्रभाव' की खोज के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। यह कार्यक्रम 'विकसित भारत के लिए विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व हेतु भारतीय युवाओं को सशक्त बनाना' विषय के अंतर्गत मनाया गया। उद्घाटन दिवस पर विज्ञान प्रयोग प्रदर्शन गतिविधि का आयोजन किया गया और सरकारी स्कूल-कड़गंची, माउंट कारमेल स्कूल, कड़गंची, विवेक वर्धनी पब्लिक स्कूल-आलंद, अप्पा पब्लिक स्कूल और एस. आर. एन. मेहता स्कूल, कलबुरगी के 300 से अधिक हाई स्कूल के छात्रों ने अपने शिक्षकों के साथ भाग लिया।

गणित को जीवंत बनाना: सीयूके ने अंतर्राष्ट्रीय गणित दिवस मनाया



18 मार्च, 2025: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूके) ने गणित विभाग द्वारा आयोजित ज्ञानवर्धक वार्ता के साथ अंतर्राष्ट्रीय गणित दिवस मनाया - इस कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों और शिक्षकों के बीच गणित की गहरी समझ और प्रशंसा को बढ़ावा देना था।

एनआईटी सूरतकल के प्रो. बी. आर. शंकर ने "मैथमेटिक्स, कंप्यूटिंग, गेम्स, एंड ए मिलियन डॉलर्स" विषय पर एक आकर्षक व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने ब्रह्मा टॉवर और नाइट्स टूर जैसी प्रसिद्ध गणितीय पहलियों पर चर्चा की और इस क्षेत्र में उनके ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डाला। एनआईटी सूरतकल के ही डॉ. विद्याधर उपाध्याय ने आधुनिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता में जनरेटिव मॉडल की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया।

उन्होंने विस्तार से बताया कि कैसे प्रायिकता वितरण, गॉसियन मॉडल, न्यूरल नेटवर्क और डीप लर्निंग आज की एआई तकनीकों के लिए मूलभूत हैं। सीयूके के कुलपति, प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने युवा मस्तिष्कों को गणित के प्रति उत्साहपूर्वक संलग्न करने के लिए प्रेरित करने के महत्व पर जोर दिया।

आयोजन सचिव डॉ. सुमुखा एस. ने कार्यक्रम के उद्देश्यों का परिचय दिया, जबकि गणित के विभागाध्यक्ष डॉ. जी. जनार्दन रेड्डी और भौतिक विज्ञान संकाय के डीन डॉ. भरत कुमार ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का समापन डॉ. समीर कर के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसने गणितीय उत्कृष्टता के उत्सव में संकाय और छात्रों को एक साथ ला खड़ा किया।

स्थायित्व में क्रांति: सीयूके संगोष्ठी विज्ञान-आधारित कार्रवाई का मार्ग प्रशस्त करती है



19 मार्च, 2025: "विज्ञान मानव जीवन का आधार है," हैदराबाद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. जगदीश्वर राव ने 19 मार्च को कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूके) द्वारा आयोजित "साइंस एंड सस्टेनेबिलिटी" विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी में बीज वक्तव्य देते हुए कहा। इस कार्यक्रम में पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने में विज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया गया।

संगोष्ठी की शुरुआत प्रमुख स्थिरता संबंधी मुद्दों पर चर्चा के साथ हुई, जिसकी शुरुआत प्रो. चंद्रशेखर बिरादर ने की, जिन्होंने आधुनिक कृषि के पतन और उसके नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण किया। उन्होंने उत्तरी कर्नाटक के शुष्क क्षेत्रों में जैविक और टिकाऊ कृषि पद्धतियों

की ओर लौटने का आह्वान किया। बीजापुर और बागलकोट जिलों में सफल मॉडल प्रदर्शित किए गए हैं। सीयूके के कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कचरे से उत्पन्न बढ़ते पारिस्थितिक असंतुलन और इसके प्रभाव को कम करने के लिए विज्ञान-आधारित समाधानों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने पर्यावरण की रक्षा के लिए टिकाऊ व्यावसायिक मॉडल विकसित करने का भी आह्वान किया।

अर्थो बायोटेक के सीईओ डॉ. प्रवीण के. सप्पा ने प्रोमिसिंग रोल ऑफ इन्सेक्ट टेक्नोलॉजी इन प्रोमोटिंग सस्टेनेबिलिटी पर प्रस्तुति दी। इस संगोष्ठी में संकाय, छात्र और आमंत्रित अतिथि शामिल हुए, जिसका उद्देश्य वैज्ञानिक नवाचार के माध्यम से नए विचारों को प्रेरित करना और सतत विकास पर चर्चा को बढ़ावा देना था।

सीयूके ने भारत में स्वदेशी प्रशासनिक प्रथाओं पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया



20 मार्च, 2025: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूके) में "ट्राजेक्टोरिएस ऑफ़ इंडिजेनस एडमिनिस्ट्रेटिव प्रैक्टिसेज इन इंडिया : ए रोड अहेड फॉर एकेडेमिया एंड प्रैक्टिस" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू हुई, जिसमें विद्वानों, प्रशासकों और नीति निर्माताओं को आधुनिक शासन में स्वदेशी परंपराओं की पड़ताल करने के लिए एकजुट किया गया। लोक प्रशासन विभाग द्वारा आईसीएसएसआर, नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारत की स्वदेशी प्रथाओं के माध्यम से शासन को नया स्वरूप देना है। मैंगलोर विश्वविद्यालय के प्रो. राजाराम तोलपडी ने अपने मुख्य भाषण में पश्चिमी शैक्षणिक ढाँचों से आगे बढ़ने और स्वदेशी जड़ों से फिर से जुड़ने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

उन्होंने शासन मॉडलों को पुनर्परिभाषित करने के लिए गांधी और लोहिया की परिकल्पना के अनुसार विकेंद्रीकरण पर ज़ोर दिया। सीयूके कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने सरकार-नागरिक संवाद को मज़बूत करने में सामाजिक-विकल्प सिद्धांत की प्रासंगिकता पर ज़ोर दिया और "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य को प्राप्त करने में स्वदेशी प्रणालियों की स्थिरता पर प्रकाश डाला। वाणिज्यिक करों की संयुक्त आयुक्त श्रीमती मीरा अलूर ने कुशल शासन के एक मॉडल के रूप में सकाला पहल का हवाला दिया। संगोष्ठी संयोजक डॉ. किरण गजानुर ने डॉ. मल्लिकार्जुन हुगर के स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम का उद्घाटन किया। संगोष्ठी में संकाय सदस्यों, शोधकर्ताओं और छात्रों की सक्रिय भागीदारी रही।

सीयूके और पीटीसी ने सहयोगात्मक विकास के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए



21 मार्च, 2025: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूके) और कलबुरगी स्थित पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय (पीटीसी) ने शैक्षणिक और व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। यह समझौता ज्ञापन ज्ञान के आदान-प्रदान, कार्यशालाओं और विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहयोग को सुगम बनाएगा।

सीयूके में विधि विद्यालय के डीन डॉ. बसवराज कुबकड्डी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि दोनों संस्थान कानून प्रवर्तन, अपराध विज्ञान और सामुदायिक सहभागिता पर सेमिनार और प्रशिक्षण सत्र संयुक्त रूप से आयोजित करने के

लिए संसाधनों, विशेषज्ञता और बुनियादी ढाँचे को साझा करेंगे। इस सहयोग में सामाजिक न्याय और पुलिस प्रशिक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर शोध के अवसर भी शामिल हैं।

इस समझौता ज्ञापन पर पुलिस अधीक्षक एवं पीटीसी के प्राचार्य श्री डी. किशोर बाबू और सीयूके के कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए। इस समझौते से दोनों संस्थानों के बीच शैक्षणिक और व्यावहारिक जुड़ाव बढ़ने की उम्मीद है, जिससे छात्रों, प्रशिक्षुओं और शोधकर्ताओं, सभी को लाभ होगा।

यह रणनीतिक साझेदारी कानून प्रवर्तन शिक्षा और शैक्षणिक संस्थानों के बीच संबंधों को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

सीयूके ने भूजल विकास पर अंतर्दृष्टि के साथ विश्व जल दिवस मनाया



21 मार्च, 2025: "जल ही जीवन है। इसके बिना कुछ भी जीवित नहीं रह सकता। सभ्यताएँ हमेशा से जलस्रोतों के आसपास ही फलती-फूलती रही हैं, और आज हमें इस संसाधन का विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए," कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूके) के कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने विश्व जल दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित "ग्राउंडवाटर डेवलपमेंट एंड मैनेजमेंट प्रैक्टिसेज" विषय पर जनसंवाद कार्यक्रम में कहा।

केंद्रीय भूजल बोर्ड (सीजीडब्ल्यूबी) द्वारा सीयूके भूविज्ञान विभाग के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में जल प्रबंधन के महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषज्ञों ने चर्चा की। सहायक जलविज्ञानी श्री नरेश चंद्र साहू ने "बेसिक्स ऑफ हाइड्रोज्योलोजी" पर चर्चा की, जबकि सीयूके के भूविज्ञान स्कूल के डीन प्रो. मोहम्मद असलम ने "हाइड्रोज्योलोजी ऑफ हार्ड रॉक टेरिन" पर प्रस्तुति दी। सीजीडब्ल्यूबी के वैज्ञानिक-डी श्री तेजस वाई. मनकिकर ने "यूज़ ऑफ़ इसोटोपस इन हाइड्रोज्योलोजी एंड जॉब ओपोर्तुनिटीज़ फॉर जियोलॉजी स्टूडेंट्स" पर व्याख्यान दिया।

इस सत्र का उद्देश्य भूजल संबंधी मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाना और सतत प्रबंधन पद्धतियों पर ज़ोर देना था। केंद्रीय भूजल बोर्ड के श्री एच.पी. जयप्रकाश ने कार्यक्रम के उद्देश्यों को रेखांकित किया और अतिथियों का स्वागत किया। भूविज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एम. लिंगदेवरु ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए इस सफल और जानकारीपूर्ण सत्र का समापन किया।

सीयूके ने बदलाव के आह्वान के साथ अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया

25 मार्च, 2025: अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर, सीयूके महिलाओं की अदम्य शक्ति का जश्न मनाने और सच्चे सशक्तिकरण के आह्वान को फिर से जगाने के लिए एकजुट हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत एमआरएमसी, कलबुर्गी की बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. अरुंधति पाटिल के एक प्रभावशाली संबोधन से हुई, जिसमें उन्होंने एक महत्वपूर्ण संदेश दिया: "हमने दुनिया को योग दिया, फिर भी हम अपने स्वास्थ्य से जुड़ा रहे हैं। अब समय आ गया है कि हम अपनी जड़ों की ओर लौटें—सचेत खरीदारी करें, खाना पकाएँ, खाएं और उन परंपराओं को अपनाएँ जो तन-मन को पोषण देती हैं।" डॉ. पाटिल ने ज़ोर देकर कहा कि अस्वास्थ्यकर आधुनिक आदतों को बदलने के लिए भारत के प्राचीन ज्ञान को अपनाना ज़रूरी है, जहाँ भोजन पवित्र और स्वास्थ्य समग्र है। उन्होंने पोषण और जागरूकता के प्रति साझा जागरूकता का आह्वान करते हुए कहा, "पुरुषों और महिलाओं को एक स्वस्थ और सशक्त जीवन के लिए मिलकर काम करना चाहिए।"

कुलसाचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने लैंगिक समानता हासिल करने के लिए अभी भी एक मार्मिक कदम उठाने की याद दिलाई। उन्होंने कहा, "भारत की 'विकसित भारत' की यात्रा महिला सशक्तिकरण पर निर्भर करती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोज़गार और नेतृत्व के क्षेत्र में, सच्चे

राष्ट्रीय विकास के लिए महिलाओं की भूमिका को और ऊँचा किया जाना चाहिए।"

अपने अध्यक्षीय भाषण में, कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने महिलाओं के स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए पुरुषों और महिलाओं को एकजुट होने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा, "महिलाएँ हर परिवार की आधारशिला होती हैं और उनका सशक्तिकरण राष्ट्रीय समृद्धि की कुंजी है।" उन्होंने इस उद्देश्य के प्रति सीयूके की दृढ़ प्रतिबद्धता की पुष्टि की, खासकर इसकी बहुसंख्यक महिला छात्र संख्या के साथ। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ प्रोफेसर और आईसीसी अध्यक्ष डॉ. सुनीता मंजनबेल को महिलाओं के मुद्दों के प्रति उनकी उत्कृष्ट सेवा और समर्पण के लिए सम्मानित किया गया। चूँकि उनकी सेवानिवृत्ति निकट है, इसलिए सीयूके में उनके नेतृत्व की विरासत का जश्न मनाया गया।

भावुक श्रद्धांजलि, प्रेरणादायक भाषणों और उत्साहवर्धक प्रदर्शनों के माध्यम से, यह कार्यक्रम एक शक्तिशाली अनुस्मारक था: महिलाओं को सशक्त बनाना केवल एक लक्ष्य नहीं है - यह सभी के लिए एक उज्ज्वल, मजबूत भविष्य की नींव है।

सीयूके ने विकसित भारत के लिए ई-कॉमर्स और डिजिटल परिवर्तन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया



28 मार्च, 2025: 2047 तक भारत का "विकसित भारत" बनने का रास्ता स्पष्ट है, जिसमें देश के युवा, तकनीकी प्रगति और नवाचार सबसे आगे हैं, यह बात आईआईएम नागपुर के निदेशक प्रो. भीमराया मेत्री ने सीयूके में आयोजित "ई-कॉमर्स एंड डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन फॉर विकसित भारत" पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में बीज वक्तव्य के दौरान कही। प्रो. मेत्री ने भारत की जनसांख्यिकीय बढ़त पर प्रकाश डाला, जहाँ दुनिया में सबसे युवा आबादी है, जो देश को तेज़ आर्थिक विकास के दौर की ओर अग्रसर कर रही है। उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत का परिवर्तन यूपीआई जैसे डिजिटल नवाचारों, आयुष्मान भारत की सफलता और डिजिटल स्टार्टअप्स की बढ़ती संख्या में स्पष्ट है। उन्होंने कहा, "भारत 2047 तक एक वैश्विक आर्थिक महाशक्ति बनने की राह पर है, जो तकनीक और भारतीय मूल्यों के मेल से प्रेरित है।"

सेमिनार का उद्घाटन कुलपति प्रोफेसर बट्टू सत्यनारायण ने किया, जिन्होंने डिजिटल क्रांति पर जोर दिया, जो वर्तमान में बैंकिंग, पर्यटन और यहां तक कि यूपीआई के माध्यम से सब्जी भुगतान जैसे रोजमर्रा के लेन-देन जैसे क्षेत्रों को नया रूप दे रही है। कार्यक्रम के दौरान सेमिनार के विषय पर एक संपादित पुस्तक का विमोचन किया गया, जिसमें प्रोफेसर बी. शुधाकर रेड्डी (आईसीएसएसआर हैदराबाद) और प्रोफेसर अंजनादेवी ताम्रगुंडी (कर्नाटक विश्वविद्यालय) के संबोधन भी शामिल थे। आयोजन सचिव प्रो. देवराजप्पा एस. ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया, जबकि व्यावसायिक अध्ययन स्कूल के डीन प्रो. पांडुरंगा पत्नी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस सेमिनार में भारत भर के शिक्षकों, छात्रों और प्रतिनिधियों ने भाग लिया।



समर्पण की विरासत: प्रो. सुनीता मंजनबैल सीयूके से सेवानिवृत्त हुईं



29 मार्च, 2025: सीयूके के हिंदी विभाग के लिए यह एक भावुक दिन था जब विश्वविद्यालय ने अपनी सबसे सम्मानित प्रोफेसरों में से एक, सुनीता मंजनबैल को विदाई दी, जो दशकों की समर्पित सेवा के बाद सेवानिवृत्त हुईं। भावभीनी सम्मान से भरे इस समारोह में न केवल उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों का सम्मान किया गया, बल्कि उनके साथ काम करने वाले सभी लोगों पर उनके गहरे प्रभाव का भी सम्मान किया गया।

कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने प्रो. मंजनबैल की अपने छात्रों और साथियों के प्रति अटूट प्रतिबद्धता की प्रशंसा करते हुए उन्हें समर्पण की प्रतिमूर्ति बताया। उन्होंने प्रशंसा से भरे स्वर में कहा, "उनका कार्य पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा।"

प्रो. मंजनबैल के लिए, शिक्षण जीवन भर का जुनून रहा। उन्होंने नम आँखों से बताया, "मेरे पिता एक शिक्षक थे, और उनके प्रभाव ने मेरे सफ़र को आकार दिया। सीयूके परिवार के प्यार और समर्थन ने यहाँ बिताए मेरे समय को सचमुच ख़ास बना दिया।"

मानविकी एवं भाषा संकाय के डीन, प्रो. विक्रम विसाजी ने उनके प्रशासनिक कौशल और स्नेहपूर्ण भावना पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, "उनकी उपस्थिति एक शांत करने वाली शक्ति थी," और उन्हें एक ऐसी मार्गदर्शक बताया जो शक्ति और दयालुता का संतुलन बनाए रखती थीं। प्रो. शिवगंगा रुम्मा और प्रो. बसवराज डोनूर जैसे सहकर्मियों ने भी उनके नेतृत्व और योगदान की सराहना की। उनका प्रभाव शिक्षण से परे, उन रिश्तों तक फैला हुआ था जिन्हें उन्होंने गर्मजोशी और स्नेह से पोषित किया। हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. संदीप रणभीरकर ने कहा कि उनकी अनुशासनप्रियता और ईमानदारी उनकी सेवानिवृत्ति के बाद भी हॉल में गूंजती रहेगी। हिंदी छात्रों द्वारा एक मार्मिक वृत्तचित्र ने साहित्य और परामर्श के प्रति उनके अथक समर्पण को प्रदर्शित किया - गर्व और प्रेम से भरी भावनात्मक श्रद्धांजलि। समारोह का समापन गीतों, डॉ. भावना द्वारा सुन्दर ढंग से संचालन तथा डॉ. मंजुलाक्षी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया। एक क्षण के लिए ऐसा लगा जैसे प्रो. मंजनबैल की उपस्थिति बनी हुई है - एक शिक्षिका जिनकी विरासत हमेशा उन लोगों के दिलों में जीवित रहेगी, जिनके साथ उनका संपर्क था।

सीयूके को इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी के लिए विश्वेश्वरैया पीएच.डी. योजना के तहत 1.02 करोड़ रुपये प्राप्त हुए

1 अप्रैल, 2025: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक वर्ष 2025-26 के लिए 'इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी के लिए विश्वेश्वरैया पीएच.डी. योजना' के तहत 1.02 करोड़ रुपये प्राप्त किए हैं। यह लगातार तीसरा वर्ष है जब विश्वविद्यालय को इतनी ही राशि प्राप्त हुई है, जिससे कुल धनराशि 3.08 करोड़ रुपये हो गई है। यह अनुदान आईटी और इलेक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान क्षेत्रों में तीन नए पीएच.डी. शोधार्थियों को सहायता प्रदान करेगा, जो पांच वर्षों के भीतर या अपनी पीएच.डी. पूरी होने पर अपनी परियोजनाएं पूरी करेंगे।

सीयूके में इस योजना के नोडल अधिकारी प्रो. आर.एस. हेगडी ने घोषणा की कि छह वर्तमान पीएच.डी. छात्र पहले से ही पिछले अनुदानों से लाभान्वित हो रहे हैं। विश्वविद्यालय जल्द ही इस योजना के तहत नए शोधार्थियों के प्रवेश के लिए अधिसूचना जारी करेगा।

कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण और कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने इस उपलब्धि के लिए टीम को बधाई दी और उन्नत अनुसंधान को बढ़ावा देने में विश्वविद्यालय की निरंतर प्रगति पर प्रकाश डाला।

सीयूके का अंकुर महोत्सव भव्य समारोह के साथ संपन्न हुआ



3 अप्रैल, 2025: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूके) में बहुप्रतीक्षित अंकुर-2025 महोत्सव के शुभारंभ के साथ ही परिसर उत्साह और गर्व से भर गया। इस वार्षिक सांस्कृतिक, खेल और नवाचार महोत्सव में 20 से अधिक राज्यों के छात्र प्रतिभा और रचनात्मकता की अद्भुत झलक दिखाने के लिए एकत्रित हुए। विविध संस्कृतियों, खेलकूद और नवोन्मेषी विचारों का उत्सव, यह महोत्सव वास्तव में एकता और समावेशिता की उस भावना को दर्शाता है जिसका सीयूके प्रतीक है।

मुख्य अतिथि पद्मश्री डॉ. विजयलक्ष्मी देशमाने ने कलबुरगी की एक झुग्गी बस्ती में पले-बढ़े होने से लेकर अपनी उपलब्धियों तक की अपनी यात्रा साझा की तथा व्यक्तित्व निर्माण में सामाजिक प्रतिबद्धता की भूमिका पर जोर दिया।

कुलसाचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने छात्रों की रचनात्मकता और गतिशील भागीदारी की सराहना की, और कार्यक्रम की भावना को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के साथ जोड़ा, जो छात्रों के समग्र विकास की वकालत करती है। समारोह में पुरस्कार वितरण भी हुआ, जिसमें मानविकी एवं भाषा स्कूल ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों में, इंजीनियरिंग स्कूल ने टीम खेलों में और व्यावसायिक अध्ययन स्कूल ने एथलेटिक्स में शीर्ष पुरस्कार प्राप्त किया। विभिन्न विद्यालयों को नवाचार कार्यक्रम पुरस्कार प्रदान किए गए।

इस कार्यक्रम में संकाय सदस्यों, डीन और छात्रों ने भाग लिया, और संगीत एवं ललित कला विभाग ने एक विशेष प्रस्तुति दी। डॉ. नितीन ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए रचनात्मकता के इस सफल उत्सव का समापन किया।

सीयूके ने डॉ. बाबू जगजीवन राम की 118वीं जयंती मनाई



5 अप्रैल, 2025: सामाजिक न्याय के पुरोधा और भारत की हरित क्रांति के सूत्रधार डॉ. बाबू जगजीवन राम की 118वीं जयंती 5 अप्रैल को सीयूके में मनाई गई। इस अवसर पर बोलते हुए, कुलपति प्रो. बट्ट सत्यनारायण ने देश की प्रगति, विशेष रूप से कृषि-आधारित आर्थिक विकास में डॉ. राम की महत्वपूर्ण भूमिका और युवाओं के लिए एक आदर्श के रूप में उनकी स्थायी विरासत पर प्रकाश डाला।

मुख्य अतिथि कुवेम्पु विश्वविद्यालय के प्रो. देवीदास जी. बी. ने डॉ. राम की सामाजिक समता के प्रति गहरी प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला और उन्हें एक

परिवर्तनकारी नेता बताया, जिन्होंने न केवल दलित समुदाय का उत्थान किया, बल्कि उसे भारतीय समाज के व्यापक ताने-बाने में एकीकृत भी किया। उन्होंने बांग्लादेश मुक्ति संग्राम में डॉ. राम की भागीदारी और ग्रामीण मजदूर आंदोलन की शुरुआत को लोकतांत्रिक नेतृत्व के मील के पथर बताया।

कार्यक्रम में संगीत एवं ललित कला विभाग के छात्रों द्वारा संगीतमय श्रद्धांजलि अर्पित की गई, जिसके बाद प्रो. देवराजप्पा ने परिचयात्मक भाषण दिया। डॉ. भावना ने सत्र का संचालन किया और डॉ. संजीवरायप्पा ने धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन किया। संकाय, छात्र और शोध छात्र डॉ. बाबू जगजीवन राम को श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्र हुए और उनके दूरदर्शी नेतृत्व और उल्लेखनीय विरासत का जश्र मनाया।

सीयूके के छात्रों ने राष्ट्रीय विचार प्रतियोगिता में बड़ी जीत हासिल की



7 अप्रैल, 2025: सीयूके के इंजीनियरिंग छात्रों की एक टीम ने हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) के बंगलुरु स्थित अनुसंधान एवं विकास केंद्र द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित "न्यू जनरेशन आइडिया कॉन्टेस्ट 2024" में दूसरा पुरस्कार प्राप्त किया। देश भर के प्रमुख आईआईटी संस्थानों सहित संस्थानों द्वारा प्रस्तुत 500 से अधिक विचारों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हुए, टीम की अभिनव परियोजना ने विशिष्ट प्रदर्शन किया और उन्हें ₹50,000 का नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। विजेता टीम में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के स्वाति साहनी, सत्यम कुमार, रोहन पटेल, अंकुर मिश्रा, कौशल कुमार और कार्तिक राजा शामिल थे। उल्लेखनीय है कि

प्रथम और तृतीय पुरस्कार क्रमशः आईआईटी दिल्ली और आईआईटी गुवाहाटी को प्रदान किए गए। संकाय समन्वयक उदय पाटिल ने छात्रों की निरंतर सफलता पर प्रकाश डाला, तथा स्मार्ट इंडिया हैकथॉन ग्रांड फिनाले 2024 में शीर्ष पांच फाइनलिस्टों में उनके हालिया चयन का उल्लेख किया। जल शक्ति मंत्रालय के तहत उनकी परियोजना ने न्यूनतम भूमि उपयोग के साथ ग्रे और ब्लैक वाटर प्रबंधन पर एक महत्वपूर्ण समस्या को संबोधित किया। कुलपति प्रो. बट्ट सत्यनारायण, कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार, इंजीनियरिंग के डीन प्रो. परमेशा और विभागाध्यक्ष प्रो. एम. अमरेंद्र ने छात्रों को राष्ट्रीय मंचों पर उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बधाई दी और उनके नवाचार और समर्पण की सराहना की।

जेनुइनिटी: सीयूके ने नवाचार और अंतर्दृष्टि के साथ विश्व सामाजिक कार्य दिवस मनाया



9 अप्रैल, 2025: सीयूके ने विश्व सामाजिक कार्य दिवस 2025 के उपलक्ष्य में सामाजिक कार्य विभाग द्वारा आयोजित सामाजिक कार्य उत्सव - जेनुइनिटी का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में तेज़ी से विकसित हो रहे समाज में सामाजिक कार्यकर्ताओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया और इसका उद्घाटन कुलपति प्रो. बट्ट सत्यनारायण ने किया।

प्रो. सत्यनारायण ने सामाजिक परिवर्तनों के बीच पीढ़ियों के बीच की खाई को पाटने और मानव कल्याण को बढ़ावा देने में सामाजिक कार्यकर्ताओं के महत्व पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा, "चूँकि समाज अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है, इसलिए सामाजिक कार्यकर्ताओं को सक्रिय रूप से अंतर-पीढ़ीगत संबंधों को पोषित करना चाहिए और बढ़ते अलगाव को दूर करना चाहिए।"

मुख्य अतिथि कुवेम्पु विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रोफेसर, प्रो. रवींद्र डी. गड़कर ने सामाजिक अन्याय को चुनौती देने और व्यक्तियों को सशक्त बनाने में सामाजिक कार्यकर्ताओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। प्रो. गड़कर ने कहा, "दूसरों को प्रेरित करने के लिए, पहले स्वयं को सशक्त बनाना होगा।"

इस कार्यक्रम में छात्रों द्वारा बनाए गए मॉडलों की एक प्रदर्शनी भी शामिल थी, जिसमें आंगनवाड़ी सेवाओं, स्वास्थ्य सेवा, कौशल विकास, नवीकरणीय ऊर्जा और सतत शहरी नियोजन जैसे प्रमुख सामाजिक कार्य विषयों को दर्शाया गया था। इन मॉडलों में वृद्धों की देखभाल और ग्रामीण सशक्तिकरण जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को भी शामिल किया गया था। कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. चिकला वेंकरेड्डी ने आयोजन के उद्देश्यों को रेखांकित किया, जबकि समाज कार्य विभागाध्यक्ष प्रो. पवित्रा आलूर ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया। सत्र का समापन डॉ. भाग्यश्री के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

वचन अब जर्मन, जापानी और स्पेनिश में: सीयूके वैश्विक अनुवाद प्रयास का नेतृत्व कर रहा है



10 अप्रैल, 2025: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूके) में 12वीं शताब्दी के वचन साहित्य का जापानी, जर्मन और स्पेनिश में अनुवाद करने पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन किया गया। यह आयोजन सीयूके के बसव पीठ, बसव समिति बेंगलूरु और बेंगलूरु सिटी यूनिवर्सिटी की संयुक्त पहल पर आयोजित किया गया है। सीयूके के कुलपति, प्रो. बट्ट सत्यनारायण ने वचन दर्शन की वैश्विक प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला और युवा पीढ़ी को शरण परंपरा में निहित भारत की लोकतांत्रिक जड़ों के बारे में शिक्षित करने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने वचनों की दार्शनिक समृद्धि के अनुवाद में युवा संकाय सदस्यों के योगदान की सराहना की और पूर्ण अनुवादों के भव्य विमोचन का सुझाव दिया। बसव समिति के अध्यक्ष डॉ. अरविंद जत्ती ने घोषणा की कि

वचनों का 30 भाषाओं में अनुवाद हो चुका है और जर्मन, जापानी और स्पेनिश सहित 10 और भाषाओं का प्रकाशन शीघ्र ही शुरू हो जाएगा। उन्होंने सीयूके और बेंगलूरु सिटी यूनिवर्सिटी के सहयोग की सराहना की और एक राष्ट्रीय स्तर के पुस्तक विमोचन समारोह की आशा व्यक्त की। सीयूके के कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने ईमानदारी, नैतिकता और बंधुत्व जैसे वचनों के मूल्यों की समकालीन प्रासंगिकता पर विशेष रूप से युवाओं के लिए जोर दिया। उन्होंने इन सिद्धांतों को विश्व स्तर पर आत्मसात करने और बढ़ावा देने के लिए नए सिरे से प्रयास करने का आह्वान किया। कार्यशाला में प्रो. सिद्धन्ना लंगोटी, प्रो. कल्याणम्मा लंगोटी और डॉ. गणपति बी. सिन्नूर सहित कई विद्वानों ने भाग लिया। विभिन्न संस्थानों के संकाय और शोधकर्ता भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

सीयूके ने समग्र विकास के लिए संस्थागत विकास योजना शुरू की



12 अप्रैल, 2025: सीयूके ने अपनी संस्थागत विकास योजना (आईडीपी) का विकास शुरू कर दिया है, जिसका उद्देश्य शैक्षणिक उत्कृष्टता, शोध क्षमता और सामुदायिक पहुंच को बढ़ाना है। यह कदम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप है, जो उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा जारी दिशानिर्देशों का पालन करता है।

आईडीपी निर्माण पर दो दिवसीय कार्यशाला 8 अप्रैल को शुरू हुई, जिसमें कुलपति प्रो. बट्ट सत्यनारायण ने यथार्थवादी आवश्यकता मूल्यांकन, अंतर विश्लेषण और हितधारक भागीदारी के आधार पर योजना तैयार करने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने व्यापक विकास सुनिश्चित करने के लिए मापनीय और सामाजिक रूप से प्रासंगिक लक्ष्य निर्धारित करने के महत्व पर जोर दिया।

कार्यकारी परिषद के सदस्य और आईजीआईडीआर के प्रोफेसर, सुधाकर येदला ने सीयूके की शक्तियों, कमजोरियों, अवसरों और चुनौतियों (एसडब्ल्यूओसी) के गहन विश्लेषण की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि संकाय, कर्मचारियों और छात्रों से प्राप्त सुझावों को एकत्रित करके अगले दस वर्षों के लिए विश्वविद्यालय की दिशा तय करने की योजना में शामिल किया जाएगा।

कार्यक्रम समन्वयक प्रो. ए. एन. विजयकुमार ने बताया कि आईडीपी के मसौदे में सीयूके के विज्ञान और मिशन के अनुरूप लक्ष्य शामिल होंगे, जिसके साथ एक विस्तृत कार्य-समय-सीमा भी होगी। सभी विश्वविद्यालय हितधारकों से प्राप्त फीडबैक को एकीकृत करते हुए अंतिम दस्तावेज़ अप्रैल के अंत तक पूरा होकर यूजीसी को प्रस्तुत किए जाने की उम्मीद है।

कार्यशाला में कार्यकारी परिषद के सदस्यों, वरिष्ठ संकाय, डीन, विभागाध्यक्षों और अन्य प्रमुख शैक्षणिक नेताओं ने भाग लिया, जो रणनीतिक विकास के लिए संस्थान की एकीकृत प्रतिबद्धता को दर्शाता है।



शिक्षा, समानता, सशक्तिकरण: सीयूके ने अंबेडकर के योगदान को याद किया



14 अप्रैल, 2025: डॉ. बी. आर. अंबेडकर की 134वीं जयंती पर, एक सुधारक, अर्थशास्त्री और संवैधानिक शिल्पी के रूप में उनकी विरासत को भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए, सीयूके में स्मरण किया गया। मुख्य अतिथि, महाराष्ट्र के माणिकचंद पहाड़े विधि महाविद्यालय के उप-प्राचार्य, प्रो. श्रीकिशन मोरे ने राष्ट्रवाद के प्रति अंबेडकर की प्रतिबद्धता पर ज़ोर देते हुए, उनके शब्दों को उद्धृत किया: "मैं चाहता हूँ कि भारतीय पहले और अंतिम भारतीय हों।" प्रो. मोरे ने शिक्षा, भूमि सुधार और हाशिए पर पड़े समुदायों के उत्थान के लिए अंबेडकर के प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने जातिगत भेदभाव से परे समाज के अंबेडकर के दृष्टिकोण का उल्लेख करते हुए कहा, "शिक्षा गरीबी और बेरोजगारी को दूर करने की कुंजी है।" कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए, कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने समुदाय से अंबेडकर के आदर्शों पर प्रतिदिन अमल करने का आग्रह किया।

उन्होंने कहा, "अंबेडकर एक महान नेता थे जो प्रतीकात्मक स्मरण से कहीं अधिक के हकदार हैं। हमें एक बेहतर भारत के निर्माण के लिए उनके मूल्यों को अपनाना होगा।"

कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादर ने अंबेडकर को एक दूरदर्शी व्यक्ति बताया जिनका विकास मॉडल आज भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने सामाजिक न्याय, उचित वेतन, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और शिक्षा के माध्यम से सशक्तिकरण, विशेष रूप से महिलाओं और वंचितों के लिए, अंबेडकर के प्रयासों पर ज़ोर दिया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. देवराजप्पा ने किया। डॉ. बाबू ने कार्यक्रम का संचालन किया और डॉ. रम्या ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रो. जी. आर. अंगड़ी, वित्त अधिकारी रामादोरई और सीओई डॉ. कोटा साई कृष्णा सहित संकाय सदस्य, छात्र और विश्वविद्यालय के अधिकारी उपस्थित थे।



सीयूके ने वैश्विक शैक्षणिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए विडज़ेमे विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए



21 अप्रैल, 2025: सीयूके ने लातविया स्थित विडज़ेमे यूनिवर्सिटी ऑफ़ एप्लाइड साइंसेज के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए, जो वैश्विक शैक्षणिक सहयोग की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस अवसर पर बोलते हुए, कुलपति प्रो. बट्ट सत्यनारायण ने कहा, "ऐसे अंतर्राष्ट्रीय समझौता ज्ञापन ज्ञान के आदान-प्रदान, शैक्षणिक विकास और मज़बूत अंतर-सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देते हैं। यह साझेदारी दोनों संस्थानों के लिए एक लाभदायक अवसर प्रदान करती है।"

इस समझौते का उद्देश्य संस्कृति, विरासत, पर्यटन और कौशल विकास जैसे क्षेत्रों में छात्र और संकाय आदान-प्रदान, संयुक्त अनुसंधान, सहयोगी प्रकाशन और शैक्षणिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देना है। प्रो. सत्यनारायण ने आगे कहा, "यह समझौता ज्ञापन व्यापक वैश्विक शिक्षा के द्वार खोलता है। हमारे छात्रों और संकाय को अंतर्राष्ट्रीय अनुभव प्राप्त होगा, और लातविया के विद्वान भारत की समृद्ध विरासत का अनुभव कर सकेंगे।"

करते हुए कहा, "यह सहयोग आलोचनात्मक सोच, निर्णय लेने और पारस्परिक शिक्षा को बढ़ावा देगा। हम सार्थक शैक्षणिक आदान-प्रदान की आशा करते हैं।" कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने समझौता ज्ञापन को एक ऐतिहासिक मील का पत्थर बताया और पर्यटन विकास में लातविया की विशेषज्ञता का हवाला देते हुए, विशेष रूप से सीयूके के पर्यटन और होटल प्रबंधन विभाग के लिए इसके लाभों पर प्रकाश डाला।

इस कार्यक्रम में भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय के अंतर्गत युवा पर्यटन क्लब का उद्घाटन भी किया गया, जिसका उद्देश्य छात्रों को पर्यटन और विरासत संरक्षण में शामिल करना है।

डॉ. जी. महेंद्र, प्रो. इगर्स एंडरसन और प्रो. पांडुरंगा पट्टी सहित दोनों विश्वविद्यालयों के संकाय सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नटराज पट्टेद ने किया और डॉ. डी. गौतम के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समापन हुआ।



सीयूके को प्रतिष्ठित अनुसंधान राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एएनआरएफ) अनुदान प्राप्त हुआ

21 अप्रैल, 2025: सीयूके के अनुसंधान एवं विकास प्रकोष्ठ के निदेशक प्रो. एन. सत्यनारायण ने कहा, "कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय को हैदराबाद विश्वविद्यालय (यूओएच) के नेतृत्व वाले क्लस्टर में स्पोक संस्थानों में से एक के रूप में प्रतिष्ठित एएनआरएफ-पीएआईआर (त्वरित नवाचार और अनुसंधान के लिए साझेदारी) अनुदान के लिए चुना गया है।" परियोजना के बारे में आगे बात करते हुए उन्होंने कहा, "यह अत्यधिक प्रतिस्पर्धी अनुदान है, जिसकी राशि 100 करोड़ रुपये है, जो अनुसंधान राष्ट्रीय अनुसंधान प्रतिष्ठान (एएनआरएफ) द्वारा प्रत्येक सफल क्लस्टर को प्रदान किया जाता है। पीएआईआर कार्यक्रम को वास्तविक दुनिया पर प्रभाव डालते हुए अंतःविषयक अनुसंधान में तेजी लाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसका उद्देश्य प्रारंभिक अवस्था में, लेकिन महत्वपूर्ण क्षमता वाले संस्थानों की अनुसंधान क्षमताओं को हब-एंड-स्पोक ढांचे के भीतर सुस्थापित शीर्ष-स्तरीय अनुसंधान संस्थानों के साथ मॉडरनिजेशन मोड में जोड़कर बढ़ाना है। हैदराबाद विश्वविद्यालय हब संस्थान है और सीयूके स्पोक संस्थान है। इस पहल से संस्थानों के बीच की खाई को पाटने और परिवर्तनकारी अनुसंधान के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करने की उम्मीद है।

अनुसंधान क्षेत्रों और टीमों के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, "सीयूके में पीएआईआर टीम में स्वास्थ्य विज्ञान, सिंथेटिक रसायन विज्ञान, जैवभौतिकी, पारंपरिक चिकित्सा, क्रिस्टलोग्राफी और स्वास्थ्य अर्थशास्त्र में विशेषज्ञता वाले 16 वैज्ञानिक शामिल हैं। हैदराबाद विश्वविद्यालय और छह अन्य संस्थानों के सहयोग से, सीयूके टीम महत्वपूर्ण जन

स्वास्थ्य चुनौतियों पर शोध करेगी, विशेष रूप से चयापचय रोगों, संक्रामक रोगों और कैंसर (एमआईसी) पर ध्यान केंद्रित करेगी।" लक्षित रोगों में मधुमेह, फैटी लिवर रोग, डेंगू, मलेरिया, स्तन कैंसर और रक्त कैंसर शामिल हैं। वे जैव चिकित्सा अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए कल्याण कर्नाटक क्षेत्र के अन्य चिकित्सा संस्थानों और अस्पतालों के साथ भी सहयोग करेंगे। सीयूके में गतिविधियों का नेतृत्व अनुसंधान एवं विकास प्रकोष्ठ के निदेशक प्रो. एन. सत्यनारायण करेंगे। सीयूके के कुलपति, प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने इस प्रतिष्ठित अनुदान को प्राप्त करने पर प्रसन्नता व्यक्त की है। उन्होंने कहा, "यह पहल, जो सामाजिक आवश्यकताओं को एक मिशन-संचालित दृष्टिकोण के साथ जोड़ती है, विज्ञान-आधारित, सुलभ स्वास्थ्य सेवा समाधान विकसित करने में मदद करेगी और साथ ही अनुसंधान के बुनियादी ढाँचे को भी मजबूत करेगी। सीयूके के संकाय सदस्य हाल के वर्षों में अनुसंधान और वित्तपोषण में निरंतर प्रगति कर रहे हैं।" पिछले वर्ष, विश्वविद्यालय को लगभग पाँच करोड़ रुपये के बाह्य अनुदान प्राप्त हुए, जिनमें "विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी अवसरचना सुधार निधि (एफआईएसटी)" के अंतर्गत रसायन विज्ञान विभाग को दी गई सहायता भी शामिल थी। इस वर्ष, सीयूके को विभिन्न विषयों में आईसीएसएसआर और एएनआरएफ जैसे प्रतिष्ठित संगठनों से कई महत्वपूर्ण धनराशि प्राप्त हुई है। ये प्रयास विश्वविद्यालय की जीवंत अनुसंधान और नवाचार संस्कृति को और मजबूत करेंगे।" कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने भी सीयूके टीम को उनकी उपलब्धि के लिए बधाई दी।

महात्मा बसवेश्वर की 892वीं जयंती मनाई गई



April 30, 2025: "अनुभव मंडप और महामने वास्तव में मानव विकास के केंद्र थे," बसव पीठ, सीयूके के समन्वयक डॉ. गणपति बी. सिन्नूर ने कहा। कल वे सीयूके में महात्मा बसवेश्वर की 892वीं जयंती के अवसर पर "अनुभव मंडप और महामने: मानव संसाधन विकास के केंद्र" विषय पर विशेष व्याख्यान दे रहे थे। उन्होंने आगे कहा, "बसवेश्वर एक महान नेता थे और उन्होंने अनुभव मंडप और महामने का निर्माण साधारण लोगों को असाधारण मानव बनाने के लिए किया था।" अस्तावरण, पंचाचार और षष्ठस्थल, शरणों के मानव विकास की पाठ्यपुस्तकें थीं। ये सिद्धांत आज के संगठनों में लोगों का अधिक कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से प्रबंधन करने के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। लिंगाचार संगठनात्मक नागरिकता का व्यवहार लाता है और लोग संगठन के प्रति अधिक निष्ठावान बनते हैं। सदाचार 'कर्म ही पूजा है' का सिद्धांत लाता है और लोगों को नैतिकता, ईमानदारी, प्रतिबद्धता और समर्पण के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। यह लोगों को कम भौतिकवादी और कम लोभी भी बनाता है। यह संगठनात्मक उत्पादकता को बढ़ाता है, देश में विकास, समृद्धि और आर्थिक समानता लाता है। शिवाचार लोगों को दूसरों के प्रति अधिक समावेशी और उदार बनाता है। यह संगठन में समानता, विविधता और समावेशिता लाता है। इस प्रकार यह संगठनात्मक भेदभाव और संघर्ष को कम करता है। इस प्रकार

संगठन कार्य करने के लिए एक सुखद स्थान बन जाता है। गणाचार लोगों को संगठन के सैनिक बनाता है। वे अधिक अनुशासित और नियमों का पालन करने वाले बनेंगे, यदि कोई इसका उल्लंघन करता है और संगठन को नुकसान पहुँचाने का प्रयास करता है, तो वे ऐसे हमलों से संगठन की रक्षा करते हैं। भृत्याचार लोगों को अधिक विनम्र और आज्ञाकारी बनाता है। यह पारस्परिक संबंधों को बेहतर बनाता है और लोगों को एक-दूसरे के प्रति मैत्रीपूर्ण और सहयोगी बनाता है।

कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए कहा, "हमें बसवेश्वर जैसे महान नेताओं का अनुसरण करना चाहिए, क्योंकि यह समय की मांग है। आज के संगठनों में हमारी संकीर्ण मानसिकता के कारण लोगों में विश्वास की कमी है, जिससे संगठन प्रभावित हो रहे हैं। हमें शरणों के सिद्धांतों का पालन करना होगा और सच्चा इंसान बनना होगा। कर्म ही पूजा है, दासोहा, समानता और समावेशिता, व्यक्तिगत समर्पण, लोकतांत्रिक नेतृत्व, विवेकशील सोच, नैतिकता और अहिंसा, बसवेश्वर के विकास मॉडल के प्रमुख सिद्धांत हैं। इन सिद्धांतों का पालन निश्चित रूप से विकसित भारत के निर्माण में सहायक होगा।"



खोज का मार्ग प्रशस्त करना

"समस्त शिक्षा का लक्ष्य और उद्देश्य मानव-निर्माण और चरित्र-निर्माण है।"
- स्वामी विवेकानंद



आपकी सहभागिता की अपेक्षा

संपादकीय दल

संपादकीय टीम: प्रो. बट्ट सत्यनारायण, माननीय कुलपति, सीयूके
संपादक : डॉ. ओडनाम बेदाजित मीतेई : सह संपादक: डॉ. के. कार्तिक, डॉ. रूपा रानी सोनोवाल
डॉ. दीप्ति: प्रेस विज्ञप्ति: डॉ. गणपति बी. सिन्नूर: हिंदी अनुवाद : डॉ. रेशमा एल. नदाफ, उप निदेशक (राजभाषा)
छात्र संपादक: इंदुजा मजूमदार और पद्मजा पी जी

प्रकाशक: प्रो. आर. आर. बिरादार, कुलसचिव, ककेवि

कृपया विभागीय कार्यक्रमों/उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण ई-मेल: bulletin@cuk.ac.in पर भेजें ताकि इसे सीयूके बुलेटिन में शामिल किया जा सके।

